Faizane Imaam Ahmed Bin Hambal (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 218
Weekly Booklet : 218

फ़ैज़ाने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल

सफ़ह़ात 21

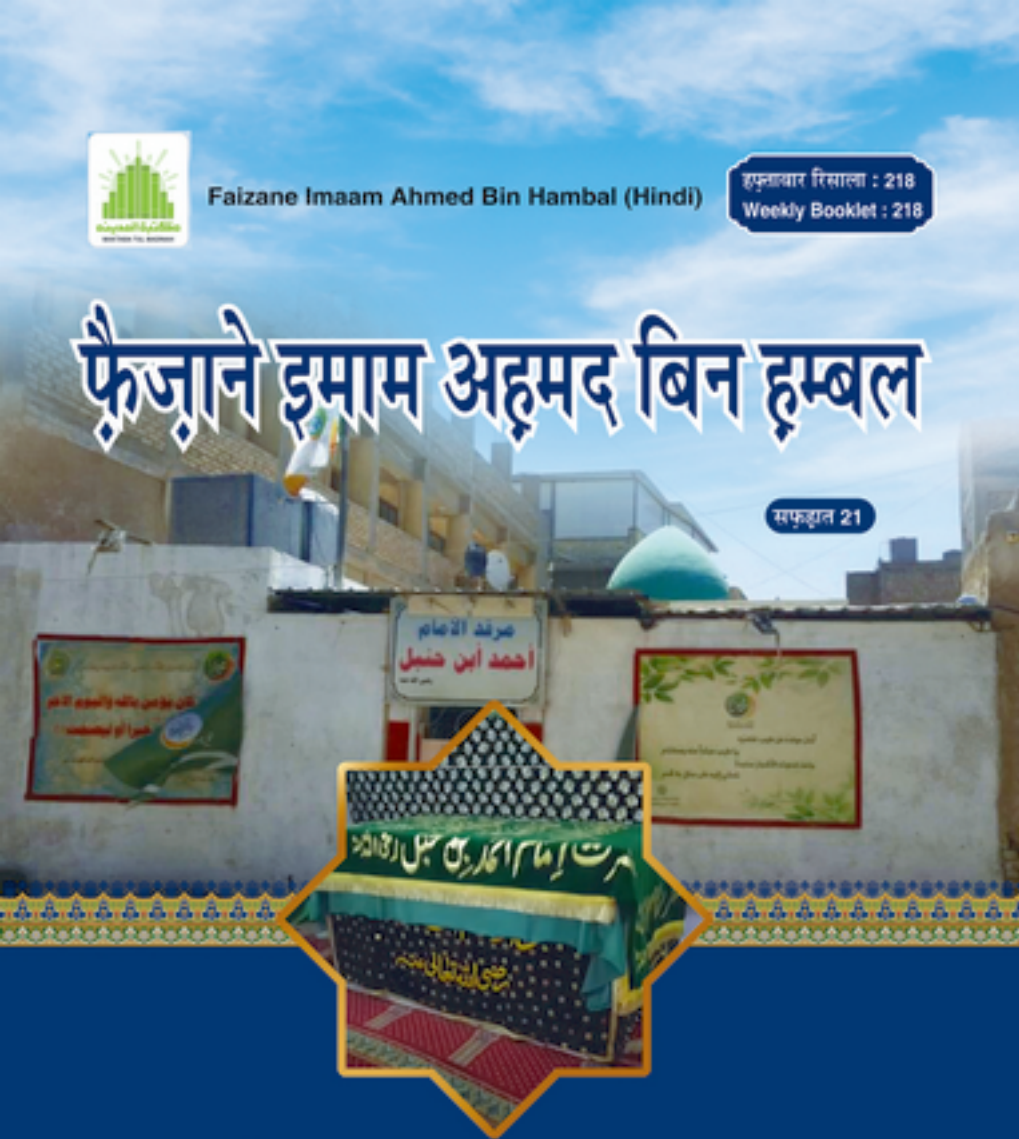

- इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رحمۃ اللہ علیہ का तआ़रुफ़ 03
- क़लम दवात आख़िरी उ़म्र तक साथ 05
- इमाम अह़मद बिन ह़म्बल की इबादात 11
- इल्मी शानो शौकत 16

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**फ़ैज़ाने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल**
सिने त़बाअ़त	:	रबीउ़ल अव्वल **1443** हि., सितम्बर **2021** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला ''**फ़ैज़ाने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल**''

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अबुल मुज़फ़्फ़र मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह समर क़न्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साह़िब नज़र आए और उन्हों ने कहा : "मेरे साथ आओ।" मैं उन के साथ हो लिया। मुझे गुमान हुवा कि येह ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام हैं। मेरे पूछने पर उन्हों ने अपना नाम ख़िज़्र बताया, उन के साथ एक और बुज़ुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम पूछा तो फ़रमाया : येह इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़मत फ़रमाए, क्या आप दोनों ह़ज़रात ने **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है ? उन्हों फ़रमाया : हां। मैं ने अ़र्ज़ की : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना हुवा इर्शादे पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं। उन्हों ने फ़रमाया कि हम ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल मुनाफ़क़त से इसी त़रह़ पाक किया जाता है जिस त़रह़ पानी से कपड़ा पाक किया जाता है। नीज़ जो शख़्स "صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल लेता है।

(القول البدیع، ص277، جذب القلوب، ص235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वलिय्युल्लाह के अदब की बरकत से बख़्शा गया

एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ? जवाब दिया, **अल्लाह** करीम ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी । पूछा : कौन सा अ़मल काम आ गया ? जवाब दिया : एक बार इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه दरिया के कनारे वुज़ू फ़रमा रहे थे और वहीं मैं बुलन्दी की त़रफ़ वुज़ू करने बैठ गया, जब मेरी नज़र इमाम साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه पर पड़ी तो ता'ज़ीमन नीचे की जानिब आ गया । बस येही "ता'ज़ीमे वली" वाला अ़मल काम आ गया और मैं बख़्शा गया । (تذکرۃ الاولیاء، ص196) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आ'माल न देखे येह देखा, है मेरे वली के दर का गदा

ख़ालिक़ ने मुझे यूं बख़्शा दिया, سُبْحٰنَ اللّٰه سُبْحٰنَ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बड़े बड़े उ़लमा सलाम करने आते

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के नेक बन्दों की ता'ज़ीम करना बड़े सवाब का काम है और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم का दिलो जान से एह़तिराम करना मग़्फ़िरत का सबब भी बन सकता है जैसा कि अभी आप ने मज़्हबे मुहज़्ज़ब ह़म्बलिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ता'ज़ीम के बारे में ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ पढ़ा । ह़ज़रते इदरीस बिन अ़ब्दुल करीम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

फ़रमाते हैं : मैं ने बे शुमार उ़लमाए किराम को देखा कि ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अपना बड़ा समझते, एह़तिराम करते और सिर्फ़ सलाम करने के इरादे से इन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा करते थे। (حلیۃ الاولیاء، 9/183، رقم:13613) न सिर्फ़ आप, बल्कि आप के शागिर्द को भी बड़ी इ़ज़्ज़तो एह़तिराम की नज़र से देखा जाता था जैसा कि आप के क़ाबिल शागिर्द ह़ज़रते मर्वज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़ज़रते ह़ज्जाज बिन शाइर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास से गुज़रे तो ह़ज्जाज बिन शाइर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उन की त़रफ़ खड़े हुए और कहा : ऐ सिद्दीक़ीन के ख़ादिम ! आप पर सलाम हो। (حلیۃ الاولیاء، 9/185، رقم:13624) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तआ़रुफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्हबे मुह़ज़्ज़ब ह़म्बलिय्या के बानी, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुबारक नाम "अह़मद" और कुन्यत "अबू अ़ब्दुल्लाह" है, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रबीउ़ल अव्वल 164 हिजरी में बग़्दाद शरीफ़ में पैदा हुए, **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आप का नसब मिलता है, आप अ़ज़ीमुश्शान तब्अ़ ताबेई़ बुज़ुर्ग थे। (तब्अ़ ताबेई़ उन्हें कहते हैं जिन्हों ने सह़ाबिये रसूल का दीदार करने वाले ताबेई़ बुज़ुर्ग की ज़ियारत की हो।) आप के वालिदे मोह़तरम बचपन शरीफ़ में ही फ़ौत हो गए यूं आप की दीनी ता'लीमो तरबियत की ज़िम्मेदारी बचपन में ही आप की वालिदए मोह़तरमा के ह़िस्से में आई। (حلیۃ الاولیاء، 9/174، رقم:13563)

शौक़े इल्मे दीन

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के शहज़ादे (या'नी बेटे) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम ने फ़रमाया कि मैं ने 16 साल की उ़म्र में ह़दीसे पाक का इल्म ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दिया और बसा अवक़ात मैं मुंह अंधेरे इल्मे ह़दीस ह़ासिल करने के लिये घर से रवाना होने लगता तो मेरी वालिदए मोह़तरमा (शफ़क़त की वज्ह से) मेरे कपड़े पकड़ लेतीं और फ़रमातीं सुब्ह़ होने दो ताकि लोगों की चहल पहल शुरूअ़ हो जाए। (مناقب امام احمد، ص31) इल्मे दीन ह़ासिल करने के शौक़ में आप ने कूफ़ा, बसरा, यमन, शाम, इ़राक़, ह़िजाज़े मुक़द्दस (या'नी अ़रब शरीफ़) जज़ीरा अ़ब्बादान वग़ैरा का सफ़र फ़रमाया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं मैं इल्मे दीन ह़ासिल करता रहूंगा यहां तक कि क़ब्र में दाख़िल हो जाऊं। (مناقب الامام احمد، ص37)

इल्मे दीन से मह़ब्बत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : हम मक्कए पाक में किसी घर में रुके, वहां ह़ज़रते अबू बक्र बिन सिमाआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ रहते थे, उन्हों ने बयान किया कि एक बार हमारे इस घर में इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ भी रुके थे, उस वक़्त मैं छोटा सा लड़का था। मुझे मेरी मां ने कहा : येह नेक शख़्स हैं तुम इन की ख़िदमत में लग जाओ। मैं उन की ख़िदमत करने लगा, आप ह़दीसे पाक का इल्म ह़ासिल करने तशरीफ़ ले जाया करते थे, एक मरतबा आप का सामान चोरी हो गया। मेरी अम्मीजान ने आप को बताया कि चोर आप का सामान चुरा कर ले गया तो आप ने सिर्फ़ इतना पूछा कि मेरे ह़दीसे पाक

वाले अवराक़ (Pages) कहां हैं ? अम्मीजान ने बताया कि वोह ताक़ में रखे हैं। इस के इलावा आप ने कुछ न पूछा। (حلیۃ الاولیاء، 9/191، رقم:13650)

जज़्बए हुस्ने अ़मल है और न इल्म नाक़िसो बेकार हूं कर दो करम

(वसाइले बख़्शिश, स. 256)

क़लम दवात आख़िरी उ़म्र तक साथ

ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते सालेह़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने मेरे वालिदे मोह़तरम को हाथ में क़लम दवात (Pen And Inkpot) लिये देख कर अ़र्ज़ किया : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप इतने बड़े मक़ाम तक पहुंच गए हैं कि आप मुसल्मानों के इमाम हैं इस के बा वुजूद आप के हाथ में क़लम दवात है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : क़लम दवात क़ब्र तक साथ हैं।

(مناقب امام احمد، ص37)

इल्मे दीन ह़ासिल करने में शर्म किस बात की ?

एक शख़्स ने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को जूते हाथ में पकड़े दौड़ते हुए देख कर आप से अ़र्ज़ किया : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! कब तक बच्चों के साथ इल्मे दीन ह़ासिल करते रहेंगे ? आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने सिर्फ़ इतना जवाब इर्शाद फ़रमाया : मौत तक। (مناقب امام احمد، ص37)

चार मश्हूर अइम्मए मुज्तहिदीन

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! चारों मश्हूर अइम्मए मुज्तहिदीन इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा, इमामे शाफ़ेई, इमामे मालिक और इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم औलियाए किराम हैं, चारों बुज़ुर्गाने दीन

क़ाबिले ता'ज़ीमो क़ाबिले एह़तिराम हैं। हमें इन सब बुज़ुर्गों का दिलो जान से अदबो एह़तिराम करना है। चारों इमाम (इमाम अबू ह़नीफ़ा, इमाम शाफ़ेई, इमाम मालिक और इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم) बरह़क़ हैं और इन चारों के ख़ुश अ़क़ीदा मुक़ल्लिदीन आपस में भाई भाई हैं, इन में आपस में तअ़स्सुब (या'नी हटधर्मी) की कोई वज्ह नहीं। मेरे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं :

मालिकी हो ह़म्बली हो ह़नफ़ी हो या शाफ़ेई   मत तअ़स्सुब रखना और करना न इन से दुश्मनी

(वसाइले बख़्शिश, स. 699)

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, इमामे आ'ज़म के शागिर्दों के शागिर्द

ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं ने सब से पहले इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से ह़दीसे पाक लिखनी शुरूअ़ कीं। (مناقب امام احمد، ص26) इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से पूछा गया कि मुश्किल तरीन मसाइल का इ़ल्म आप को कहां से ह़ासिल हुवा ? फ़रमाया : इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की किताबों से। (مناقب ابی حنیفہ وصاحبیہ للذھبی، ص79تا86ماخوذاً) जब कि इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम और इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के शागिर्द हैं। (تاریخ بغداد، 5/179ماخوذاً) (गोया इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम इमामे आ'ज़म के शागिर्दों के शागिर्द हैं।)

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल की इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से मह़ब्बत

ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं चालीस साल से जो भी नमाज़ पढ़ता हूं उस में ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के लिये दुआ़ ज़रूर करता हूं। आप के साह़िब ज़ादे ने अ़र्ज़

की : अब्बूजान ! येह शाफ़ेई कौन हैं जिन के लिये आप दुआ़ करते हैं ? तो ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे बेटे ! ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दुन्या के लिये सूरज की त़रह़ और लोगों के लिये आ़फ़ियत का बाइ़स थे तो अब बताओ ! क्या इन दो सिफ़ात में कोई उन का नाइब (Successor) है ? (احیاء علوم الدین، 1/46 ملتقطا)

तक़्वा व परहेज़ गारी

ह़ज़रते इदरीस ह़द्दाद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक बार इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़ज के लिये मक्कए पाक ह़ाज़िर हुए तो वहां आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर ग़ुर्बत (Poverty) आ गई । आप के पास एक बाल्टी (Bucket) थी । आप ने वोह किसी चीज़ के बदले एक सब्ज़ी बेचने वाले के पास गिरवी (या'नी रेहन) रख दी । जब **अल्लाह** पाक ने आप की ग़ुर्बत दूर फ़रमा दी तो आप उस सब्ज़ी वाले के पास आए और उसे रक़म दे कर अपनी बाल्टी का मुत़ालबा किया । सब्ज़ी वाले ने एक जैसी दो बाल्टियां ह़ाज़िर कर दीं और कहने लगा : मुझ पर आप की बाल्टी मुश्तबह (Doubtful) हो गई है, आप इन में से जो चाहें ले लें । आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझ पर भी मुआ़मला मुश्तबह हो गया है कि कौन सी बाल्टी मेरी है ? **अल्लाह** पाक की क़सम ! मैं इसे बिल्कुल न लूंगा । सब्ज़ी वाले ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं भी इस को दिये बिग़ैर न छोड़ूंगा । आख़िर कार दोनों ह़ज़रात उन को बेच कर रक़म सदक़ा करने पर राज़ी हो गए । (ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 431)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

क़ब्रो आख़िरत का ख़ौफ़

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! देखा आप ने ? हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم शुब्हे की चीज़ से किस त़रह़ बचते थे ह़ालां कि यक़ीनन दोनों में से एक बाल्टी इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की ही थी मगर चूंकि वोह आपस में इस त़रह़ मिक्स हो गई थीं कि अपनी बाल्टी कौन सी थी येह पता नहीं चल पा रहा था लिहाज़ा आप ने लेने से ही इन्कार फ़रमा दिया। सब्ज़ी बेचने वाले का ख़ौफ़े ख़ुदा सद करोड़ मरह़बा ! कि वोह भी अपनी शै को राहे ख़ुदा में ख़र्च करने ही पर रिज़ामन्द हुवा। काश ! हम भी शुबे वाली चीज़ों से बचने की कोशिश करें। शुबे वाली चीज़ दिल की ह़ालत ख़राब करती और नेकियों में दिल लगने से रुकावट बनती है, इमाम अबू त़ालिब मक्की رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ फ़रमाते हैं : बन्दे को जो चीज़ें रात को **अल्लाह** पाक की इबादत से महरूम करने वाली या फिर उस की त़वील ग़फ़्लत का बाइस बनती हैं वोह तीन हैं : (1) शुबे वाली अश्या खाना (2) गुनाहों पर इसरार करना (3) दिल पर दुन्यावी मह़ब्बत का ग़ालिब होना। (قوت القلوب، 1/76)

आ़शिक़े माल इस में सोच आख़िर क्या उ़रूजो कमाल रख्खा है ?
तुझ को मिल जाएगा जो क़िस्मत में तेरी, रिज़्क़े ह़लाल रख्खा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 699)

सुन्नत पर अ़मल का जज़्बा

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ के बारे में मन्क़ूल है कि वोह ख़रबूज़ा (Melon) नहीं खाते थे। उन से इस की वज्ह पूछी गई तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे इस के खाने से सिर्फ़ येह चीज़ रोकती है कि मुझे मा'लूम

नहीं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे किस त़रह़ खाया था। (فیض القدیر، 4/477، تحت الحدیث:5618)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे गुमान के मुत़ाबिक़ वोह बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه थे। (حدیقہ ندیہ، 1/14)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्हबे मुहज़्ज़ब ह़म्बलिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه कितने बड़े आ़शिक़े रसूल और आ़शिक़े सुन्नत थे, काश ! हमें भी सुन्नतों पर अ़मल का अ़ज़ीम जज़्बा अ़त़ा हो जाए, अफ़्सोस ! हम तो कई सुन्नतों का पता होने के बा वुजूद अ़मल नहीं करते, सलाम करना सुन्नत है मगर सुस्ती हो जाती है, अपने मुसल्मान भाई से मुस्कुरा कर मिलना सुन्नत है मगर हमारी मुस्कुराहट तो सिर्फ़ मख़्सूस दोस्तों (Specific Friends) ही के लिये होती हैं, सीधे हाथ से खाना, पीना, लेना देना सुन्नत है मगर बे तवज्जोही कहें या ला इ़ल्मी रोज़ाना के कई कामों में भी इस सुन्नत की त़रफ़ तवज्जोह नहीं जाती। सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिंडली तक लिबास का मुआ़मला हो तो इस में नित नए फ़ेशन आड़े आ जाते हैं काश ! सुन्नतों का दौर दौरा हो और हर मुसल्मान सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर बन जाए।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सुन्नत में अ़ज़मत है, सुन्नत में बरकत है, सुन्नत में दुन्या व आख़िरत की राह़त है। सुन्नत में नजात है और सुन्नतों पर अ़मल करने में ही दुन्या व आख़िरत की सआ़दतें हैं। **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अ़मल करने का शौक़ बढ़ाने की अच्छी

निय्यत के साथ सुन्नत के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सुन्नत पर अ़मल के बारे में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **(1) अल्लाह** पाक के अ़र्श के सिवा क़ियामत के रोज़ कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** पाक के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला। (البدور السافرۃ فی امور الاخرۃ للسیوطی، ص131، حدیث366) **(2)** जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (مشکاۃ المصابیح، 1/55، حدیث:157) **(3)** जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वोह मुझ से नहीं। (بخاری، 3/421، حدیث:5063)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी दीनी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" में शामिल हो जाइये और सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये। अ़ज़ीम आ़शिक़े सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जिन्हों ने इस ज़माने में सुन्नतों की ऐसी धूम मचाई है कि बच्चे बच्चे को इ़मामे शरीफ़ का ताज सजा कर सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मतवाला बना दिया है। आप फ़रमाते हैं : हम अहले सुन्नत हैं और हमें आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से प्यार है।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 रबीउ़ल अव्वल 1438 ब मुत़ाबिक़ 9 दिसम्बर 2016)

शहा ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 428)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की इबादात

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन इमाम अह़मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम रोज़ाना एक मन्ज़िल क़ुरआने करीम पढ़ते और हर सात दिनों में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करते, यूंही सात रातों में भी एक क़ुरआने करीम ख़त्म फ़रमाते और येह दिन की नमाज़ों की तिलावत के इ़लावा होता आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नमाज़े इ़शा के बा'द कुछ देर आराम फ़रमा कर सुब्ह़ तक नमाज़ व दुआ़ में मसरूफ़ रहते । (حلیۃ الاولیاء،9/192، رقم:13658 ماخوذا)

मज़ीद फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सब लोगों से ज़ियादा तन्हाई पर सब्र करने वाले थे, (या'नी ख़ल्वत व तन्हाई इख़्तियार करते थे) आप को मस्जिद, जनाज़े में ह़ाज़िरी या किसी मुसल्मान की इ़यादत के इ़लावा और कहीं नहीं देखा जा सकता था और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बाज़ारों में घूमना ना पसन्द था । (حلیۃ الاولیاء،9/195، رقم:13669) आप रोज़ाना 300 नवाफ़िल अदा फ़रमाते थे, जब आप पर आज़्माइश आई तो बीमारी के बा'द आप रोज़ाना 150 नवाफ़िल अदा फ़रमाते ह़ालां कि उस वक़्त आप की मुबारक उ़म्र 80 साल थी । (حلیۃ الاولیاء،9/192، رقم:13657)

उतरते चांद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले अंधेरा पाख आता है येह दो दिन की उजाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 182)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने इस शे'र में ज़िन्दगी के अनमोल लम्ह़ात गुनाहों और ग़फ़्लत में गुज़ारने वाले को झंझोड़ते हुए फ़रमा रहे हैं : ऐ ग़ाफ़िल नौ जवान ! तेरी ज़िन्दगी का चांद

घटना शुरूअ़ हो गया है या'नी तेरी उ़म्र रोज़ाना कम होती जा रही है **अल्लाह** पाक की जितनी इ़बादत करनी है कर ले, क्यूं कि जैसे इस्लामी महीने के आख़िरी 15 दिन में चांद कम होता चला जाता है ऐसे ही अब तेरी ज़िन्दगी ख़त्म होती जा रही है, अ़न्क़रीब क़ब्र का अंधेरा आया चाहता है येह ज़िन्दगी की रौनक़ें, ऐ़शो सुकून बस दो दिन का है, अपने रब को राज़ी कर ले।

मेरे प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم की मुबारक सीरतो अख़्लाक़ पढ़ कर इन पर अ़मल करने और अपने दिल को दुन्या की मह़ब्बत से बचाने का ज़ेह्न बनाना चाहिये, यक़ीनन एक वक़्त आने वाला है जब हम मर जाएंगे फिर हमारे साथ हमारी क़ब्र में कोई नहीं आएगा, हमारे साथ हमारे अच्छे या बुरे आ'माल होंगे, बची खुची ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए सच्चे दिल से अपने सारे गुनाहों से तौबा कर के नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़ेह्न बना लीजिये, ख़ुदा न ख़्वास्ता अब तक नमाज़ों में सुस्ती थी तो अब पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त मस्जिद की पहली सफ़ में पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये, ह़राम रोज़ी कमाते थे तो इस से भी तौबा कर के इस के शर्ई तक़ाज़े पूरे कीजिये, रिश्वत का लेनदेन था तो इस से भी पीछा छुड़ा लीजिये कि रिश्वत लेना देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, गाली गलोच और ह़क़ तलफ़ियों से तौबा कर के अपने प्यारे प्यारे रब्बे करीम को राज़ी करने की कोशिश में लग जाइये वरना याद रखिये ! मरने के बा'द दुन्या में वापस आने का मौक़अ़ नहीं मिलेगा। मेरे आक़ा, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का फ़िक्रे

आख़िरत का अन्दाज़ सद करोड़ मरह़बा ! आप जब भी किसी जनाज़े में जाते तो उस दिन न खाना खाते, न उस रात सोते । आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जब कोई क़ब्र देखते तो इस त़रह़ रोते जैसे वोह औ़रत रोती है जिस का बच्चा फ़ौत हो चुका हो । (الروض الفائق، ص221)

ढल जाएगी येह जवानी जिस पे तुझ को नाज़ है तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

20 साल की मा'ज़ूरी दूर हो गई

ह़ज़रते अ़ली बिन अबी ह़रारा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरी वालिदा 20 साल से चलने फिरने से मा'ज़ूर (Handicapped) थीं । एक दिन उन्हों ने मुझे कहा : ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास जा कर अ़र्ज़ करो कि वोह मेरे लिये दुआ़ करें । मैं उन के घर पहुंचा और दरवाज़ा खटखटाया । आप दरवाज़े के पास ही मौजूद थे मगर दरवाज़ा न खोला और पूछा : कौन ? मैं ने अ़र्ज़ की : मैं यहीं का रहने वाला हूं, मेरी मां काफ़ी अ़र्से से चलने फिरने से मा'ज़ूर है, उन्हों ने मुझे आप से दुआ़ करवाने के लिये भेजा है कि आप उन के लिये **अल्लाह** पाक की बारगाह में सिह़्ह़त की दुआ़ कर दें । आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कुछ ख़फ़ा हुए और फ़रमाया : "हम इस बात के ज़ियादा ज़रूरत मन्द हैं कि तुम हमारे लिये **अल्लाह** पाक से दुआ़ करो ।" मैं जाने के लिये पलटा तो आप के घर से एक बूढ़ी ख़ातून बाहर तशरीफ़ लाईं और पूछा : अबू अ़ब्दुल्लाह (येह इमाम अह़मद बिन ह़म्बल की कुन्यत है) से अभी आप ने गुफ़्तगू की है ? मैं ने कहा : जी हां । तो उन्हों ने जवाब दिया : मैं उन्हें देख कर आ रही हूं कि वोह **अल्लाह** पाक से तुम्हारी वालिदा के लिये दुआ़ कर रहे हैं । ह़ज़रते अ़ली बिन अबी ह़रारा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहते हैं : मैं फ़ौरन घर आया

और दरवाज़े पर दस्तक दी तो मेरी वोह मां जो पिछले 20 साल से चलने फिरने से मा'ज़ूर थी वोह अपने पाउं पर चल कर आई और दरवाज़ा खोल कर कहा : **अल्लाह** पाक ने मुझे सिह़्ह़तो आ़फ़ियत अ़त़ा फ़रमाई है। (حلیۃ الاولیاء،9/197، رقم:13678)

निगाहे वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गों से दुआ़ करवाना

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! इस वाक़िए़ से पता चला कि बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم से दुआ़ करवाने का अन्दाज़ सदियों पुराना है, आज भी लोग अपने बच्चों को नेक लोगों, बुज़ुर्गों से दम करवाते, अपनी परेशानियों के ह़ल के लिये इन से दुआ़एं करवाते हैं और अगर बुज़ुर्गाने दीन से सच्ची मह़ब्बत और इन की दुआ़ओं पर पक्का यक़ीन हो तो **अल्लाह** पाक की रह़मत से बारहा फ़ौरन असर ज़ाहिर हो जाता है जैसा कि अभी वाक़िए़ में आप ने पढ़ा। **अल्लाह** करीम हमें भी अपने नेक बन्दों, औलियाए किराम का अदबो एह़तिराम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

सादगी व आ़जिज़ी

ह़ज़रते अ़ली बिन मदीनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के घर में दाख़िल हुवा तो उन का घर इसी त़रह़ सादा था जिस त़रह़ ज़ोह्द और आ़जिज़ी व इन्किसारी में ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सुवैद बिन ग़फ़ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के घर का वस्फ़ बयान हुवा। (حلیۃ الاولیاء،9/186، رقم:13630) ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम ने पांच

ह़ज पैदल किये और दो ह़ज सुवारी पर और एक ह़ज में सिर्फ़ बीस दिरहम ख़र्च किये । (حلیۃ الاولیاء، 9/187، رقم:13634) ह़ज़रते नस्र बिन अ़ली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ कहते हैं : इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का आख़िरत का मुआ़मला अफ़्ज़ल है क्यूं कि आप के पास दुन्या आई मगर आप ने उसे अपने आप से दूर किया । (حلیۃ الاولیاء، 9/191، رقم:13651)

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 513)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इ़ल्म का समुन्दर

ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़दीसे पाक का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये कुछ लोग ह़ज़रते अबू आ़सिम ज़ह़्ह़ाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हुए, आप ने उन्हें देख कर फ़रमाया : तुम फ़िक़्ह क्यूं नहीं सीखते, क्या तुम में कोई फ़क़ीह (या'नी आ़लिम) नहीं ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हम में एक शख़्स ऐसा है । ह़ज़रते अबू आ़सिम ज़ह़्ह़ाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : कौन ? हम ने कहा : वोह अभी आते हैं । फिर जब मेरे वालिदे मोह़तरम इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ तशरीफ़ लाए तो लोगों ने अ़र्ज़ किया : वोह आ गए हैं । ह़ज़रते अबू आ़सिम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने आप को देख कर अ़र्ज़ किया : आगे आइये । आप ने फ़रमाया : मैं ना पसन्द करता हूं कि लोगों की गरदनें फलांगूं । ह़ज़रते अबू आ़सिम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : येह बात इन की फ़िक़्ह में से है, इन के लिये जगह कुशादा (या'नी खुली) करो । लोगों ने जगह कुशादा की तो आप आगे तशरीफ़ ले आए । ह़ज़रते अबू आ़सिम

رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने आप को अपने सामने बिठा कर एक मस्अला पूछा तो आप ने उस का जवाब दिया। फिर दूसरा मस्अला पूछा तो आप ने उस का भी जवाब दिया फिर तीसरा मस्अला पूछा तो आप ने उस का भी जवाब दिया। फिर मज़ीद मसाइल पूछे तो आप ने सब के जवाबात भी इर्शाद फ़रमा दिये। येह देख कर ह़ज़रते अबू आ़सिम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : येह तो इल्म का समुन्दर हैं। (مناقب امام احمد لابن جوزی، ص96)

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की शानो शौकत

इमाम अबू दावूद सजिस्तानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने 200 बुज़ुर्ग उ़लमा से मुलाक़ात की लेकिन उन में ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ जैसा कोई न देखा। (حلیۃ الاولیاء، 9/175، رقم:13567) अ़ज़ीम मुह़द्दिस ह़ज़रते इमाम अबू ज़ुरआ़ राज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने इल्म के मुख़्तलिफ़ फ़ुनून में इमाम अह़मद बिन ह़म्बल जैसा कोई न देखा और जिस त़रह़ आज़्माइश की घड़ी में आप साबित क़दम (Steadfast) रहे कोई और न रहा। मैं ने आप को फ़रमाते हुए सुना कि मैं ने (अपने उस्ताद) ह़ज़रते हुशैम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से जो कुछ सुना उसे उन की ज़िन्दगी में ही याद कर लिया। (مناقب امام احمد لابن جوزی، ص163-84) आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को दस लाख अह़ादीस ज़बानी याद थीं। (طبقات الشافعیۃ للسبکی، احمد بن محمد بن حنبل، 2/31، رقم:7)

ह़दीसे पाक देख कर बयान फ़रमाते

इल्मे ह़दीस के बहुत बड़े इमाम ह़ज़रते अ़ली बिन मदीनी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमारे अस्ह़ाब में इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से बढ़ कर ह़दीस शरीफ़ का ह़ाफ़िज़ कोई नहीं। वोह ह़दीसे पाक को अपनी किताब से देख कर बयान फ़रमाते थे और इस में हमारे लिये बेहतरीन

नुमूना (Excellent Example) है । (مناقب امام احمد لابن جوزی، ص47) (कि हम भी ह़दीसे पाक देख कर बयान करें ।)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम को बिग़ैर किताब के ज़बानी ह़दीस रिवायत करते नहीं देखा सिवाए कुछ ह़दीसों के जिन की ता'दाद 100 से कम होगी । (مناقب امام احمد لابن جوزی، ص349)

एह़तियात़ सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को दस लाख अह़ादीसे मुबारका ज़बानी याद थीं और आप अपने वक़्त के ह़दीसे पाक का इ़ल्म जानने वालों के इमाम थे, इस के बा वुजूद आप की आ़जिज़ी व इन्किसारी मरह़बा सद मरह़बा कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक देख कर बयान फ़रमाते थे । इस में हमारे लिये बहुत बड़ा सबक़ है क्यूं कि ह़दीसे पाक का मुआ़मला बहुत नाज़ुक है, अपने अन्दाज़े से किसी बात को ह़दीसे पाक कह देना या अपनी अट्कल (Guess) से किसी रिवायत का ह़दीसे पाक होने से इन्कार कर देना बहुत बड़ी बेबाकी व जुर्अत है, ऐसी जुर्अत कभी भी नहीं करनी चाहिये ।

बुरे ख़ातिमे की वईद है

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आदमी को बिग़ैर इ़ल्म के **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस में बात करने से डरना चाहिये और इस फ़न (या'नी इ़ल्मे ह़दीस) को ह़ासिल करने की मुसल्सल कोशिश करनी चाहिये, यहां तक कि उसे इस फ़न (या'नी इ़ल्मे ह़दीस) में महारत (Spiciality) और कमाल ह़ासिल हो

जाए, इस के बिग़ैर ह़दीसे पाक में बात करने वाला कहीं उस ह़दीसे पाक के हुक्म में दाख़िल न हो जाए कि जो बिग़ैर इ़ल्म के बात करता है उस पर **अल्लाह** पाक और फ़िरिश्तों की ला'नत है, और वोह इस धोके में न रहे कि दुन्या में तो कोई ऐसा नहीं जो इस पर इन्कार करने वाला हो, लेकिन मौत के बा'द उस को मा'लूम हो जाएगा या तो क़ब्र में या पुल सिरात़ पर, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां उस के सामने होंगे और उस से गोया यूं फ़रमाएंगे कि तू ने मेरी ह़दीस के बारे में कैसे बिग़ैर इ़ल्म के जुर्अत की और कलाम किया या यूं फ़रमाएंगे कि तू ने उस बात को रद किया जो मैं ने फ़रमाई थी या तू ने मेरी त़रफ़ ऐसी बात की निस्बत की जो मैं ने फ़रमाई न थी, क्या तू ने मुझ पर उतरे हुए क़ुरआने करीम में न पढ़ा था कि उस बात के पीछे न पड़ना जिस का तुझे इ़ल्म नहीं। बेशक सम्अ़, बसर (या'नी कान, आंख और) दिल, इन में से हर एक से सुवाल किया जाएगा। लिहाज़ा उस दिन बड़ी ख़राबी और बड़ी रुस्वाई है। येह भी उस सूरत में जब कि ईमान पर ख़ातिमा हुवा हो, वरना तो और ख़राबी है। बहुत से गुनाह ऐसे होते हैं जिन पर बुरे ख़ातिमे की वईद है। मौत के वक़्त अक्सर लोगों के ईमान ज़ाएअ़ होने का सबब ज़ुल्म है और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस में बिग़ैर इ़ल्म के गुफ़्तगू करने की जुर्अत से बढ़ कर कौन सा ज़ुल्म होगा। हम **अल्लाह** पाक से मुआ़फ़ी और आ़फ़ियत का सुवाल करते हैं। (الحاوی للفتاوی، 2/137-138 ملتقطا)

डर लगता है ईमां कहीं हो जाए न बरबाद सरकार बुरे ख़ातिमे से मुझ को बचाना
जब रूह मेरे तन से निकलने की घड़ी हो शैत़ाने लई़ं से मेरा ईमान बचाना

(वसाइले बख़्शिश, स. 352)

अदब का मुन्फ़रिद अन्दाज़

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बीमारी की वज्ह से टेक लगाए हुए थे कि आप की ख़िदमत में ह़ज़रते इब्राहीम बिन त़हमान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का ज़िक्रे ख़ैर हुवा तो आप फ़ौरन सीधे बैठ गए और फ़रमाने लगे नेक बन्दों के ज़िक्र के वक़्त टेक लगा कर बैठना मुनासिब नहीं।

(الآداب الشرعیّہ، 2/26، مکتبہ مؤسسۃ الرسالہ)

कभी फ़ख़्र न किया

ह़ज़रते यह़्या बिन मई़न رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ जैसा कोई न देखा। हम उन की सोह़बत में 50 साल रहे और इन पचास सालों में उन्हों ने कभी अपनी नेकी और भलाई के ज़रीए़ हम पर फ़ख़्र न किया।

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल की मीज़ान में नेकियां

ह़ज़रते अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन इब्राहीम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बा'द के तमाम मुसल्मानों की नेकियां ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की मीज़ान में हैं इसी त़रह़ ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के बा'द के लोगों की नेकियां इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की मीज़ान में हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

(येह रिसाला माहे रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के उ़र्स की मुनासबत से तह़रीर किया गया है। इन की मुबारक सीरत के मज़ीद वाक़िआ़त आप आयिन्दा अक़्सात़ में मुलाह़ज़ा फ़रमाएंगे)

बुढ़ापे में भी 150 रक्अ़ात

इ़माम अह़मद बिन ह़म्बल رحمۃ اللہ علیہ रोज़ाना 300 नवाफ़िल अदा फ़रमाते, जब आप पर आज़्माइ़श आई तो बीमारी के बा'द आप रोज़ाना 150 नवाफ़िल अदा फ़रमाते ह़ालांकि उस वक़्त आप की उ़म्र मुबारक 80 साल थी। (حلیۃ الاولیاء، 9/192، رقم: 13657)

978-969-722-129-5
01082226

فیضانِ مدینہ، محلّہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net